एक कदम

अपना घर, नानकारी आई0 आई0 टी, कानपुर

कोशिश और आशा

मंजिल और भविष्य की योजना

भूमिकाः– आदमी आजीविका की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह प्रवास करके अपने आप को जिन्दा रखता रहा है. ये परम्परा सदियों से जारी है। इसी परम्परा की एक कड़ी के रूप में ईट भठ्ठा मजदूर, शोषण और दमन के बीच ठेकेदार के गिरफत में बंधुआ मजदूर की तरह अभिशप्त जिन्दगी जीने को मजबूर है। ईट भठ्ठो पर काम करने वाले अप्रवासी मजदूर नवम्बर माह में आते है। बारिश के कारण जून से अक्टूबर माह तक ईट भठ्ठें बन्द रहते है। इस दौरान सभी मजदूर अपने अपने गांव चले जाते है ।

ईट भठ्ठों में समस्यायेंः–

- ईट भठ्ठा पर जो बच्चें रहते है वो बाल मजदूर के रूप में काम करते हैं। ईट भठ्ठो पर बच्चें 7 वर्ष की उम्र से काम में लग जाते है। निकासी, घोड़ा चराना, बुग्घी चलाना और पथाई में ये बच्चें काम करते है। इस काम से प्रतिदिन की आय करीब 25 से 50 रू0 तक की हो जाती है।
- प्रतिदिन 12 से 15 घंटे काम करना पड़ता है। गर्मी के दिनों में तों रात के 12 बजे दिन के 12 बजे तक काम करना पड़ता है।
- 12 घंटे काम करने के बाद अपना स्कूल में जब बच्चे पढ़ने आते है तो कई बच्चें सोने लगते है।
- निकासी का काम में बच्चें छोटी उम्र से ही काम करते है। इस काम में भठ्ठे में पक गये ईटो को बाहर निकाल कर लाना होता है। निकासी के समय ईटे गर्म रहती है। इस काम में बच्चों के स्वास्थ्य पर काफी असर पड़ता है। ईटो को निकालने के दौरान बहुत सारी धूल बच्चों के फेफड़ों में चली जाती है, जिसके कारण बच्चों को फेफड़े में इनफैक्शन हो जाता है। इससे बच्चों की असामयिक मौत हो जाती है।
- बच्चें जब काम के कारण ज्यादा थक जाते है तो वो नशे का सहारा लेते है थकान मिटाने के लिए। छोटी उम्र में ही बच्चें सिगरेट, भांग, शराब और अन्य मादक पदार्थ के नशे के साथ साथ जुअे के भी आदी हो जाते है। जो उम्र के साथ बढ़ती जाती है।

- बच्चों के परिवार वाले ठेकेदार से ज्यादा कर्जा ले लेते है जिसको पूरा करने की कोशिश में परिवार के लोग बच्चों से ज्यादा से ज्यादा काम लेते है।
- अप्रवासी मजदूर 6 महिने ही भठ्ठों पर रहते है इस के कारण बच्चों की पढ़ाई ठीक से नही हो पाती है। अपना स्कूल में पढ़ने के बाद जब बच्चें अपने गांव वापस जाते है। उस दौरान उनकी पढ़ाई बन्द हो जाती है। बिहार में शिक्षण सत्र जनवरी में शुरू होता है। इस कारण इनका प्रवेश वहां के स्कूलो में नहीं हो पाता है।
- बच्चों के परिवार वाले ठेकेदार से कर्ज लेने के कारण वो उनके बंधुआ मजदूर के रूप में हो जाते है। कई बार तो किसी के मां बाप कर्ज लिए होते है और उस कर्ज को पूरा करने के लिए लोगो को ठेकेदार के यहां बंधुआ मजदूर के रूप में जिन्दगी भर काम करना पड़ता है तब भी कर्ज पूरा नहीं हो पाता है।
- ठेकेदार ज्यादा–ज्यादा से मुनाफा कमाने के लिए हरेक साल भठ्ठा बदलता रहता है। जिसके कारण बच्चों की पढ़ाई कभी पूरी नहीं हो पाती है। पढ़ाई पूरी न होने के कारण बच्चें बड़े होकर भी उसी शोषण दमन और बंधुआ मजदूरी के चक्र में पिसते रहते है।

कोशिशः–

- बच्चों को काम के बोझ से बाहर निकाल कर उनको एक बेहतर माहौल उपलब्ध कराने की कोशिश कर रहे है। जिससे उनका बचपना सुरक्षित और खुशहाल रह सके।
- बच्चें नियमित विद्यालय जा रहे है जिससे उनको बेहतर शिक्षा मिल रही है।
- बच्चों के लिखने, पेन्टिंग नाटक और अन्य कला में उनकी रूचि के अनुसार प्रतिभाओं को विकसित करने की कोशिश की जा रही है।
- मानवीय मूल्यों के साथ उनका पालन पोषण किया जा रहा है ताकि वे बड़े होकर अपने आप को एक अच्छे इंसान के रूप में विकसित करने के साथ साथ समाज को एक बेहतर दिशा में ले जाने में भागीदार हो सके।
- बच्चों को अभी से विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि उनकी रूचि जानने के साथ साथ उनके अन्दर अपने पैरो पर खड़े होने कि लिए आत्मविश्वास भी पैदा किया जा सके।
- नियमित स्वास्थ्य परिक्षण कराने के साथ साथ बच्चों को पोषक आहार दिया जा रहा है।
- हरेक परिवार से एक एक बच्चें अपना घर में रह रहे है ताकि एक बच्चा अगर स्वावलम्बी होगा तो उसका पूरा परिवार उस शोषण से मुक्त हो जायेगा।

- बच्चों को नियमित छुट्टियों में घर जाकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि अपने परम्परागत काम से जुड़ाव रहने के साथ साथ इस काम के प्रति आदर और सम्मान भी बरकार रहे।

भविष्य की योजनाः–

- अपना घर को 100 बच्चों तक रखने के लिए विकसित करना जहां अप्रवासी मजदूरों के बच्चें रहकर नियमित रूप से शिक्षा ग्रहण कर सके. इसीलिए 100 बच्चों के रहने की व्यवस्था के लिए जमीन खरीदने के प्रस्ताव रखा गया है

- प्रत्येक बच्चें को 12 वी तक की शिक्षा देने की जिम्मेदारी का निर्वाह अपना घर करेगा।

- कक्षा आठवीं के बाद बच्चों को रूचि अनुसार उनको व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे वे 12 के बाद के पढ़ाई का खर्च खुद वहन कर सकें और स्वावलम्बी हो सके.

- अपना घर को बनाने के लिए ज्यादा जमीन का प्रस्ताव इसलिए रखा गया है कि ताकि बच्चों के लिए वहां पर विभिन्न प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जा सके। अपना घर में रहने वाले सभी बच्चें श्रम से जुड़े हुए है। इस जमीन पर सब्जी और अनाज का उत्पादन भी किया जायेगा, जिससे बच्चों का श्रम का प्रति लगाव बने रहने के साथ साथ अपना घर स्वावलम्बन के प्रति अग्रसर भी हो सके ।

- अभी जो निर्माण का प्रस्ताव है वो 25 बच्चों के लिए बाकी का निर्माण और तीन चरणो में पूरा किया जायेगा । जो अन्त तक 100 बच्चों के रहने लायक निर्माण पूरा किया जायेगा।

- अभी 12 बच्चें अपना घर में है. निर्माण पूरा होने के बाद 10 बच्चें और लिए जायेंगे। उसके बाद प्रत्येक वर्ष 10 और बच्चें लिए जायेंगे जो आने वाले समयों में कुल बच्चों की संख्या 100 हो जायेगी।

- प्रत्येक 25 बच्चें पर एक अभिभावक और एक संरक्षक और उसके एक सहायक होंगे। जो एक परिवार के रूप में रहेंगे, जिससे बच्चों के सही अर्थो में अपने घर का एहसास हो सके ।

- अपना घर में 100 बच्चें होने के बाद हम लोग साथ मे एक स्कूल भी शुरू करेंगे जिसमें ये तों बच्चें पढ़ेगे साथ ही बाहर के भी बच्चें उसमें पढ़ेंगे । बाहर के बच्चों से आने वाली फीस से उस स्कूल का खर्च वहन किया जायेगा।

- लड़कियों का भी अपना घर शुरू करना जिसकी जिम्मेदारी का निर्वहन पूजा रहेजा जी करने को तैयार है

- पूजा रहेजा और संदीप रहेजा जिन्होने आई0आई0टी0 कानपुर से पढ़ाई की और अभी तक यू0ए0ई0 में नौकरी कर रहे थे, अब इस काम में पूर्ण रूप से मदद करने के लिए आ गये हैं। उनकी मदद से बच्चों और अपना घर के स्वावलम्बन की दिशा के बारे में सोचना और उसे कियान्वयन करके स्थापित करना।

आशा :–

- अपना घर से जाने के बाद प्रत्येक बच्चा अपने आप में स्वावलम्बी हो सके और अपने परिवार को शोषण और दमन से मुक्त करके समाज के लिए एक आदर्श प्रतिस्थापित कर सके। जिससे समाज को एक प्रेरणा मिलती रहे।
- प्रत्येक बच्चें का आत्मविश्वास मजबूत हो. और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने के साथ–साथ अपने अधिकारों के लेने कि लिए संघर्ष भी कर सके.
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कदम से कदम मिलाकर मजबूती के साथ खड़े होकर अपने को स्थापित कर सकने की क्षमता का विकास।
- लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपने को भागीदार बनाने के साथ साथ अन्याय के खिलाफ खड़े होने और लड़ने की साहस और सोच की क्षमता का निरंतर विकास।
- अपना घर से शिक्षा पाने के बाद समाज में शिक्षा से अभावग्रस्त लोगों के प्रति अपनी जिम्मेदारी सुनिश्चित करें, और एक शिक्षित समाज के निर्माण कर सकें।

महेश/विजया दीदी/पूजा रहेजा
अपना घर
बी0 135, नानकारी, प्रधान गेट
आई0आई0टी0, कानपुर उ0प्र0
मो0 +91-9838546900
E-mail: maheshballia@gmail.com, rvijaya26@yahoo.co.in, poojaraheja77@gmail.com